अंतरा-शब्दशक्ति

आईना

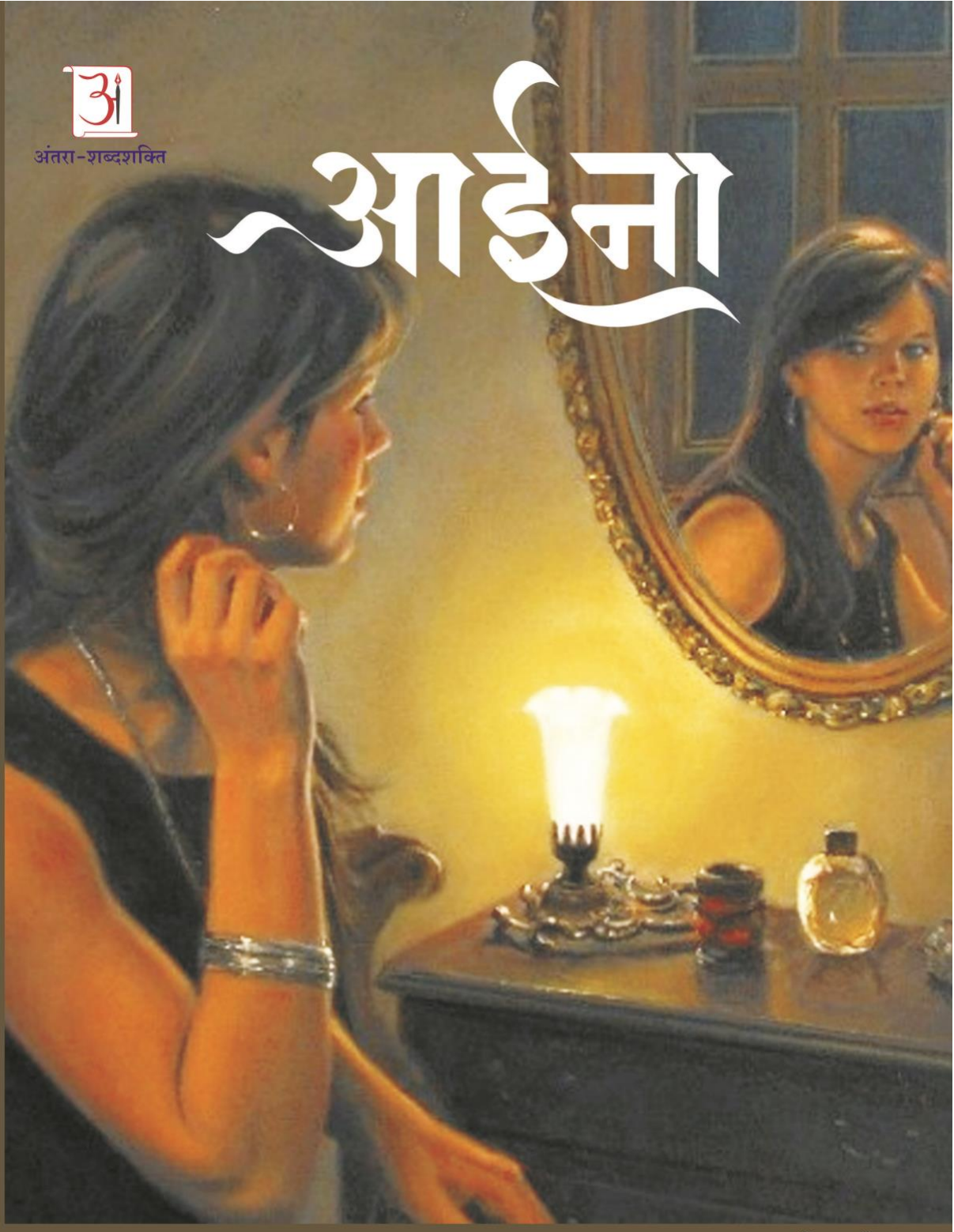

काव्य संग्रह

मधु तिवारी

आईना

(काव्य संग्रह)

मधु तिवारी

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-86666-23-9

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा- एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabdshkti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ - मधु तिवारी

मूल्य - ५५.०० रुपये

आवरण चित्र- संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

Aaina by Madhu Tiwari

वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भावाभिव्यक्ति

काव्य अपने हृदय के भावों को व्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम है। काव्य के द्वारा भी हम देश समाज की सेवा कर सकते हैं। यदि कुछ करना ही है अपने देश के लिए, समाज के लिए तो एक रचनाकार के लिए पुस्तक लेखन एक सशक्त जरिया हो सकता है। ईश्वर प्रदत्त इस प्रतिभा को प्रत्येक रचनाकार सकारात्मक दिशा में ले जाकर इसका सदुपयोग कर सकता है।

मुझे अपने लेखन के बारे में याद नहीं है कि कब से मैंने लेखन प्रारंभ किया। क्योंकि मेरे पिताजी "श्री सी.पी. तिवारी सावन" भी कवि हैं उन्हीं की कविताओं को पढ़कर मुझे प्रेरणा मिली। परंतु शिक्षिका बनने के बाद ही लेखन को गति मिली हमारे प्रशिक्षण में सभी शिक्षकों को कुछ भी सुनाने के लिए आमंत्रित किया जाता था तो मैं स्वरचित कविता सुनाया करती थी। तो सभी बहुत पसंद करते थे और सुनाने का आग्रह करते थे। इससे उत्साहित होकर मैं निरंतर कविताएं लिखती चली गई और अपने शिक्षक बंधुओं बहनों को भी सुनाती गई। अब निरंतर लिखना जारी है। कविताओं के साथ लघुकथाएँ, कहानियां अपनी मातृभाषा छत्तीसगढ़ी और हिंदी मे लिखती हूँ। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित होती रहती है। जो भी लिखती हूँ स्वांत सुखाय लिखती हूँ जो मेरे दिल को तसल्ली दे, दिल छू जाए या दिल को झकझोर दे। ऐसी परिस्थितियाँ मुझे कलम चलाने को प्रेरित करती हैं। साथ ही प्रकृति से मुग्धता और ईश्वर के प्रति कृतज्ञता यही मेरे काव्य विषय हैं।

अन्तरा-शब्दशक्ति हिंदी भाषा के उत्थान एवं रचनाकारों को उपयुक्त मंच प्रदान करने के सत्कार्य में लगा हुआ है। हम इसके माध्यम से अपनी रचनाओं को पाठक के समक्ष रखने में शीघ्र सक्षम हुए हैं। इसके लिए

अन्तरा-शब्दशक्ति समूह एवं विशेषकर संस्थापक डॉ. प्रीति सुराना जी का सादर आभार व्यक्त करती हूँ।

आईना मेरा दूसरा काव्य संग्रह है अपने मनोभावों को शब्दों में पिरो कर आपके समक्ष गीत कविताओं के रूप में प्रस्तुत कर रही हूँ और आपकी प्रतिक्रिया और मार्गदर्शन की आकांक्षी हूँ।

मधु तिवारी

अनुक्रमणिका

1.	शारदे माँ	7
2.	आईना	8
3.	माँ	9
4.	पिता	10
5.	परिवार	11
6.	बसंत	12
7.	सोलह श्रृंगार	13
8.	जय बोलो भारत माता की	14
9.	सद्भावना	15
10.	बेईमान	16
11.	दुख	17
12.	कैसे कहें अधूरी है	18
13.	अक्षर	19
14.	नारी	20
15.	लक्ष्मी बाई	21

16. डर 22

17. आँसू 23

18. पावन 24

19. अंश 25

20. जरुरत 26

21. गुरु-शिष्य 27

22. श्रद्धा 28

23. सत्य-असत्य 29

24. एकता 30

25. दीवारें 31

शारदे माँ

वीणा बजाना माँ तुन तुन तुन। शारदे माँ मेरी, सुन सुन सुन।

भारत के युवा भटक रहे हैं
बुरे विचार में अटक रहे हैं
कई की अकल लगी घुन घुन घुन। शारदे माँ मेरी, सुन सुन सुन।

राष्ट्रहित में उनको लगाना
गलत सोच को मन से भगाना
ऐसा चक्कर कोई चुन चुन चुन। शारदे माँ मेरी सुन सुन सुन।

मान करे नहीं जो विधान का
उसको दंड मिले अपमान का
माँ जरा इसको भी गुन गुन गुन। शारदे माँ मेरी सुन सुन सुन।

अपने धर्म पर आहें भरते
दूजे धर्म की निंदा करते
इनका मस्तक जरा धुन धुन धुन। शारदे माँ मेरी सुन सुन सुन।

भारतीय जन को एक बनाना
शुद्ध विचार से नेक बनाना
माथ में कर पायल छुन छुन छुन। शारदे माँ मेरी सुन सुन सुन।

आईना

अपने मन दर्पण से देखो, इस जगत का चेहरा।
समझो जानो भाई तुम,यह राज बहुत है गहरा।

पीछे करो सुधार जगत का, पहले खुद को सुधारो।
दोष न मढ़ना गैरों पर तुम, अपना प्रथम विचारो।
थोप् के गलती किसी को भी ना बनाओ मोहरा।
अपने मन दर्पण से देखो इस जगत का चेहरा।

जैसी करनी वैसी भरनी, कर्म का फल मिलेगा।
काटे बोंकर कांटे पाओ, बोंवो फूल खिलेगा।
तुम भटको न ईर्ष्या द्वेष में, लगा नयन पर पहरा।
अपने मन दर्पण से देखो, इस जगत का चेहरा।

साफ करो पहले मन अपना, फिर औरों को देखो।
खोजो गुण भी सब में भाई, केवल दोष न लेखो।
तभी समझो है कौन गंजा,है किसके सर सेहरा।
अपने मन दर्पण में देखो इस जगत का चेहरा।

मेरा-मेरा करते तू भी, इस जग से जायेगा।
सदा सही कर्मों को रखना, हाथ न कुछ आएगा।
मानव जन्म मिलाअपना, हर पल बना लो सुनहरा।
अपने मन दर्पण से देखो, इस जगत का चेहरा।

देख जरा उस आईने को,जो सच ही दिखलाए।
सत्य स्वीकार बढ़ना आगे, वह हमको सीखलाए।
साफ रहे बहता पानी पर नीर सड़े जो ठहरा।
अपने मन दर्पण से देखो इस जगत का चेहरा।

माँ

माँ तेरी ममता का, मोल नहीं है।
इससे ज्यादा कुछ,अनमोल नहीं है।

कोख से जनम दिया,अमृत पिलाया है
एक-एक निवाला, तूने खिलाया है
तेरे प्यार का कहीं तोल नहीं है।
माँ तेरी ममता का मोल नहीं है।

सामर्थ्य से अधिक सब कुछ लुटाया है
संतत के लिए तूने सब जुटाया है
ठोस,कहीं ममता मे पोल नहीं है।
माँ तेरी ममता का मोल नहीं है।

अनपढ़ या पढ़ी, ज्ञान उसे दिलाती हो
डगर यही चलके,जगत से मिलाती हो
साथी हो खूब,कहीं झोल नहीं है।
माँ तेरी ममता का मोल नहीं है।

सहती है कष्ट पर बेटे को पालती
तहे दिल से उसको,माँ ही संभालती
नेह मे है दृढ़ता,कभी ढोल नहीं है।
मां तेरी ममता का मोल नहीं है।

रीत को निभाने, बेटी को जुदा किया
उसे अपने घर से,सीख दे विदा किया
सीख से बड़ा, कोई बोल नहीं है।
माँ तेरी ममता का मोल नहीं है।

पिता

बचपन मे तो पिता, सबसे प्यारा होता है।
सभी से बढ़कर और, जग से न्यारा होता है।

पिता ही हीरो जो,सब कुछ कर सकता है।
सपने मे बच्चे के रंग वही भर सकता है।
संसति सुख के लिए, दिन रात एक करे।
उसके भले का काम,वह सदा नेक करे।

कह दे औलाद जो, पत्थर की लकीर है।
पूरी करे पिता उसे,खुद बने फकीर है।
जैसे-जैसे पुत्र भी बड़ा होते जाता है ।
खुद को हीरो उसे, जीरो बने पाता है।

ज्ञानी मान खुद को,पिता को नकारता है।
उसकी कमाई पर ही, भविष्य सँवारता है।
पिता की संपत्ति को,शान से वह खाता है।
फूटी आँखों उसे अब, पिता नहीं भाता है।

अपनी कमाई पर जब, घर को चलाता है।
पिता की जरूरतों पर,आँख तब दिखाता है।
झुकी कमर चश्मे नजर, तन जवाब देता है।
पुत्र फिर पिता को भी,बोझ मान लेता है।

रहे साथ तो भी वह, मुख मोड़ लेता है।
या वृद्धाश्रम मे, ले जाके छोड़ देता है।
आज जो सपूत है, वो बड़ा ही महान है।
ऐसे पूत पिता हेतु, ईश्वरीय वरदान है।

परिवार

हो जाते हैं एक कभी और कभी-कभी तकरार है।
एक दूजे की कभी खिंचाई, कभी हो बेहद प्यार है।

संग संग रहते हैं सभी, अलग अलग विचार है,
कभी कोई बेकसूर हो तो, कोई गुनहगार है।
एक दुखी हो तो सबके, बहते नयनधार है,
कोई सफल हो तो सबकी, खुशियाँ पारावार है।

जीवन नैया की केवल, एकता ही पतवार है,
एक ना हो अगर कहीं, सब डूबे मझधार है।
छोटी-छोटी खुशियाँ ही, होता यहाँ आधार है,
बड़े बड़े दुखों से वे, एक हो पाते पार हैं।

अभी लड़ाई हो अगर, अगले पल मनुहार है,
दूर अगर जाए कोई, मदद को सब तैयार हैं।
कुछ भी और नहीं है ये, यही तो घर संसार है,
अहमियत सदा जिसकी, प्यारा अपना परिवार है।

बसंत

देखो...आया बसंत
बिरहा का नहीं अंत
अब भी न आया कंत
क्या खुशी मनायें।

प्यारी है मैना शुक
कोयली की है कूक
मन मे उठे है हूक
कहो कहाँ जायें।

खिले हैं खूब पलास
जगी है मन मे आस
जो तु आयेगा पास
खुशियाँ भी आये।

होली मनाएँ संग
आओ लगाएँ रंग
खा लें तनिक भंग
प्रेम गीत गायें।

सोलह श्रृंगार

आया करवाचौथ पर्व है, मैं सोलह श्रृंगार करूंगी
नखशिख तक सज सँवर के, चन्दा का दीदार करूंगी

सही सोंच की बिंदिया से अपना माथ सजा करके
मधुर वचन की लाली से होठों को रंगा करके
प्रिय का इंतजार करूंगी, मैं सोलह श्रृंगार करूंगी

सच्चे प्रेम का हार पहन हृदय को सजाना है
सत्कर्म की कंगना से कलाइयाँ खनकाना है
शांति का अवतार करूंगी, मैं सोलह श्रृंगार करूंगी

आशीष हिना हथेली पर नेह कजरा से नैन सवारुँ
विश्वास की करधनी कमर मे पहन खुद को खूब निखारुँ
क्षमा पैरी छनकार करूंगी, मैं सोलह श्रृंगार करूंगी

बिछुए होंगे समर्पण के, अंगुठियाँ होंगी ममता की
दया रूपी महावर शोभा, बाजुबंद हो समता की
इनसे जीवन सत्कार करूंगी, मैं सोलह श्रृंगार करूंगी

पतिव्रता की ओढ़ चुनरीया, घाघरा पहनूं मर्यादा की
लज्जा चोली में लगाऊं, गोटा जीवन सादा की
पहन अपना उद्धार करूंगी, मैं सोलह श्रृंगार करूगी
आया करवाचौथ पर्व है, मैं सोलह श्रृंगार करूंगी...

जय बोलो भारत माता की

माँ संतती नाता की, जय बोलो भारत माता की
जन्म लिए जिस गोद मे,जननी भाग्य विधाता की

अमृत जल स्वादु भोजन खाकर बड़े हुए हैं
मात कृपा से ही अपने पैरों पे खड़े हुए हैं
चरण धरे हम सौ सौ बार, ऐसे जीवन दाता की
जय बोलो भारत माता की.....

राम कृष्ण को गोद खिलाई गाते वेद पुराण है
संग चले बाइबिल गुरुग्रंथ औऱ चले कुरान है
सद्भावना से भारत का,रहा सदा उस नाता की
जय बोलो भारत माता की.....

विश्व गुरु कहलाता भारत जहाँ सनातन धर्म है
वसुधैव कुटुम्बकम यहाँ युगों युगों से कर्म है
कितने मनीषी हुए यहाँ,लगी हुई उस ताँता की
जय बोलो भारत माता की.....

सद्भावना

अनेक जाति धर्म यहाँ, हैं अनेक ही कामना,
फिर भी भारतवर्ष में, सदा रही सद्भावना।

दीपावली में भी झूमें सब, ईद मे भी इठलाएँ हम,
बैसाखी औऱ क्रिसमस में, मिलकर खुशी मनाए हम।

अलग-अलग है वेशभूषा, अलग अलग है भाषा भी,
फिर भी गुलदस्ता प्यारा सदभाव की परिभाषा भी।

खान पान अपना-अपना, हम सभी को प्यारा है,
फिर भी औरों का चखें, यह अंदाज़ भी न्यारा है।

मानवता सिखलाते सब, हम करते हैं जीव कल्याण,
वसुधैव कुटुम्बकम का, भाव युगों की है पहचान।

भारत की ये विशेषता, विश्व मे बड़ा निराला है,
सुन लो विश्व निवासियों, यही प्रेम का प्याला है।

हो अगर मतभेद कभी, उसको ना उलझाइए,
प्रेम औऱ सद्भावना से, हरदम ही सुलझाइए।

बेईमान

आज धोखेबाज, क्यों इंसान हो गया।
जिधर देखो उधर बेईमान हो गया।
अपने मतलब में घूमें आगे पीछे,
औरों की बारी में अनजान हो गया।

कुटिल चाल चल चल के दौलत बनाता।
दूसरों के दुखों में मन मन मुस्काता।
सत्य सरल राह तो सुनसान हो गया।
आज धोखेबाज, क्यों इंसान हो गया।

सीढ़ी बने रिश्ते सब जाए ऊपर चढ़ के।
मतलब में काम करें लोग आगे बढ़के।
घायल हुआ प्रेम, अहम महान हो गया।
आज धोखेबाज क्यों इंसान हो गया।

सच का साथी आज देखो मूरख कहलाय।
पीठ पर जो वार करे आगे सहलाय।
फरेबियों का अब तो गुणगान हो गया।
आज धोखेबाज क्यों इंसान हो गया।

दुख

मेरे प्रभु जी राज की मैं एक बात बताती हूँ।
सुख को सुनती है दुनिया दुख तुम्हें सुनाती हूँ।

सुख में सब आगे-पीछे हों, दुख में न कोई आए
आए तो बस इतना कि वे दुनिया दारी को निभाएं
दर पे तेरे मैं ज्यादा दुखियों को पाती हूँ।
सुख को सुनती है दुनिया दुख तुम्हें सुनाती हूँ

सबकी दुखड़ा रोज सुने होता है वही महान
दर तेरा दुखियों का ठिकाना कोई नहीं अनजान
तू दुख लेकर के सुख देता बलिहारी जाती हूँ।
सुख को सुनती है दुनिया दुख तुम्हें सुनाती हूँ।

आई जब बुढ़ापा सब सब लाठी देख के चलते
साथ न दे जब कोई अपने हाथों को तब मलते
ज्यादा दिन नहीं रखना मुझे तुमको समझाती हूँ।
सुख को चुनती है दुनिया दुख तुम्हें सुनाती हूँ।

एक प्रार्थना तुझसे प्रभुजी ! सबको दे सद्बुद्धि
जग में सपूत सपूती हों, न हो कोई दुर्बुद्धि
पितरौ सेवा सभी करें तुम्हें माथ नवाती हूँ।
सुख को सुनती हैं दुनिया दुख तुम्हें सुनाती हूँ।

कैसे कहें अधूरी है

तेरी प्रेम कहानी राधा कैसे कहें अधूरी है।
परमपिता से नेह लगाया वैसे हो गई पूरी है।

वृंदावन में रास रचाने कुंवर कन्हाई आए थे।
प्रेम दिया तुमको ही ज्यादा हंस कर गले लगाए थे।
जिसकी प्रशंसा सुर नर मुनि जन करते भूरी-भूरी है।
तेरी प्रेम कहानी राधा कैसे कहें अधूरी है।

राधा रानी भक्ति तुम्हारी औरों से बड़ी न्यारी है।
नटवर नागर नंदकिशोर की तू ही सबसे प्यारी है।
उनके हृदय में तुम रहती भले ही उनसे दूरी है।
तेरी प्रेम कहानी राधा कैसे कहें अधूरी है।

दुनिया रटती कृष्णा-कृष्णा, कृष्णा रटते राधे हैं।
प्रेम किया सारे जग से पर तुम्हारी भक्ति साधे हैं।
नाचे जगत जिस प्रेम से वह कृष्णा-राधे ही धूरी है।
तेरी प्रेम कहानी राधा कैसे कहें अधूरी है।

अक्षर

अक्षर अक्षर जुड़ता तो, बनते शब्द मोती है।
इन शब्दों से वाक्य रच, काव्य रचना होती है।

सदग्रंथों का हर अक्षर, लिखा सुनहरा होता है।
पढ़ने से जो भाव मिले, वह भी गहरा होता है।

मानस का अक्षर-अक्षर पढ़ो, उठाकर तुम सादर।
मर्यादित श्री राम का तब, सदा करोगे ही आदर।

गीता का उपदेश यहाँ, रचे अक्षरों से कृष्णा।
पढ़कर एक-एक अक्षर को, मिटा लो मन से भव तृष्णा।

प्रेम बताया अक्षर ने, बाइबल और कुरान में।
जीवन दर्शन सोच सही, देखिए वेद पुराण में।

अक्षर मिलकर सदग्रंथ बने, ज्यों ईंटों से घर बनता।
जीवन सुखमय करने को, दोनों में ही मन रमता।

अक्षरों का करें शुक्रिया, जिनसे हम बनते ज्ञानी।
शुक्र है सभी विद्वानों का, अक्षर लाया जो प्राणी।

नारी

ममता प्यार की मूरत नारी, रूपसी भोली सूरत नारी।
घर की पहली जरूरत नारी, शुभ कर्मों की महूरत नारी।

पिता की अल्हड़ छोरी नारी, भाई की रेशम-डोरी नारी।
साजन की प्रिय गोरी नारी, मित्र की जोरा जोरी नारी।

सजाती सदा घर-बार नारी, रच देती घर-संसार नारी।
बांटे दुनिया में प्यार नारी, यहाँ सृष्टि का है सार नारी।

आधी जगत आबादी नारी, पुरुष की है आजादी नारी।
दुष्टों की है, बर्बादी नारी, बहन, मां, नानी, दादी नारी।

दुर्गा रूपा है शक्ति नारी, मीरा राधा की भक्ति नारी।
समस्या हलों की युक्ति नारी, भवसागर से भी मुक्ति नारी।

गीता वेद पुराण में नारी, मुस्लिम धर्म कुरान में नारी।
गिरजाघर सम्मान में नारी, गुरूद्वारा बखान में नारी।

कोमल बनी जो तनसे नारी, है मजबूत वो मन से नारी।
ताकतवर जो सहन से नारी, कालिका क्रोध अगन से नारी।

लक्ष्मी बाई

यह सच है कि भारत देश, वीरों की भूमि रही है।
वीरांगनाओं की यहां, पर कोई कमी नहीं है।

लक्ष्मीबाई नाम जिसका, वह झांसी की रानी थी।
अंग्रेजों से लोहा लेने, कमरकस कर ठानी थी।
बचपन में ही खेल खिलौने, बरछी और तलवार थे।
साथी बड़े रहे बहादुर, हरदम लड़ने तैयार थे।

मोरोपंत की बेटी थी, मनु प्यारा सा नाम था।
साहस की बातें करना, वीरता उसका काम था।
गंगाधर से ब्याह हुआ, तब वह झांसी में आई।
बनी रानी जब वहां की, लक्ष्मी बाई कहलाई।

पुत्र हुआ जो चल बसा तो, दुख का बादल मंडराया।
राजा गंगाधर ज्यादा दिन, उसका साथ न दे पाया।
दत्तक पुत्र दामोदर को तब, ना माना अंग्रेजी शासन।
विलय नीति को ढाल बनाकर, डिगा दिया रानी आसन।

पीठ में बांधी पुत्र अपना, ऐसी लड़ाई लड़ाई थी।
वीरता से उस ललना ने, देश का मान बढ़ाई थी।
लड़ती रही तब तक रानी, जब तक तन में प्राण रहे।
उगे जगत में चांद सूरज, तब तक मनु का मान रहे।

डर

हमको कोई भय नहीं यह, कहना ही बेमानी है।
लेकिन डर-डर के जीना भी, अपनी ही नादानी है।
लगता है नारी के लिए, यही दुनिया बेगानी है।
लेकिन डर डर के जीना भी अपनी ही नादानी है।

यहाँ कैसी तेरी तकदीर, केवल बनी हुई है शरीर,
धारी हुई है कैसे धीर, सहेगी कब तक ऐसी पीर,
जान सहनशक्ति को तेरी, होती बड़ी हैरानी है।
लेकिन डर डर के जीना भी, अपनी ही नादानी है।

बाहर निकले तो भी डरती, घूरती नजरें पीछा करती,
सूनसान में जब तू रहती, भय से ठंडी आहें भरती'
आधी आबादी होकर भी, कैसी यह भय खानी है।
लेकिन डर डर के जीना भी, अपनी ही नादानी है।

कभी किसी को एकल पाते, रक्षक भी भक्षक बन ही जाते,
क्यों वे मन में भय ना खाते, पहरेदार कहां रह जाते,
सदा सदा ही नारी से, होती क्यों मनमानी है।
लेकिन डर डर के जीना भी अपनी ही नादानी है।

बेटी, बहादुरी दिखाना, अपराधी को मजा चखाना,
करो हिम्मत, नहीं घबराना, जान भले ही पड़े गँवाना,
शक्ति अंश गजब है तुझमें और अजबही कहानी है।
लेकिन डर डर के जीना भी अपनी बड़ी नादानी है।

आँसू

जहां कदर हो जाना नहीं, आंसू व्यर्थ बहाना नहीं।
सुनो आंसू अपने अनमोल, कहीं भी इसे गिराना नहीं।

मगरमच्छी आंसू बहाते, हितु बनने का ढोंग रचाते,
दिल की उन्हें सुनाना नहीं। आंसू व्यर्थ बहाना नहीं।

जो न होता अपना हितैषी, उससे भला उम्मीदें कैसी,
उनको करीब बुलाना नहीं। आंसू व्यर्थ बहाना नहीं।

बिन मुस्कान क्या देखें मुखड़ा, न सुनो तो सुनाएं क्यों दुखड़ा,
जीवन मे इन्हें लाना नहीं। आंसू व्यर्थ बहाना नहीं।

करता रहता जो परनिन्दा, हो न गलत कारज शर्मिंदा
उनसे तु हाथ मिलाना नहीं। आंसू व्यर्थ बहाना नहीं।

मतलब में जो पीछे आए, तुझे जरूरत तो नट जाए,
उन्हें तो कभी मनाना नहीं। आंसू व्यर्थ बहाना नहीं।

जो होता है सीधा-सादा, सज्जनता जिसमें हो ज्यादा,
पास इनके घबराना नहीं। आंसू व्यर्थ बहाना नहीं।

पावन

पावन मेरा देश निराला, पवित्र सनातन यहां धर्म है।
मन में भी हमारी पवित्रता, पावन ही हमारा कर्म है।

अहिंसा और सत्य के बल पर, आजादी हमने पाई है।
ऐसे अनोखे रीत हमारे, जग में जो प्रीत बढ़ाई है।

धर्म ग्रंथ अनेक हैं पावन, सदभावना जो सिखाते हैं।
कभी आए आपात कोई, मिल जुलकर प्रेम दिखाते हैं।

पावन सरिता गंगा यमुना, जो संस्कृति पोषण करती है।
तट को सींचे उर्वरता से, पाप-ताप को भी हरती है।

पावन मेरे देश की मिट्टी, पावन जहां देश विधान है।
सभी धर्म और जाति भी सम, एक एक जनों का मान है।

पावन भारत भू पर देखो, विराजे पावन तीरथ धाम।
करते हैं दर्शन जिनके हम, हरिहर कृष्णा जय सियाराम।

पावनता है कण-कण में, यहां रहते हम अभिमान से।
ऐ भारतवासी! गर्व करो, इस देश की महिमा गान पे।

अंश

अंश थी, मैं तेरे हृदय की,.. क्यों जग में मुझ को ला न सकी।

अच्छा ही किया जो न ला, दुनिया का दुख ना दिखलाई,
अपनों के हाथों, पाई गति,.. क्यों जग में मुझ को ला न सकी।

तेरे चमन अधिक हरियाली, लाती आंगन में खुशहाली,
मार किया है यह कैसी अति,.. क्यों जग में मुझको ला ना सकी।

हो सकता है जग में आती, किसी वहशी से रौंदी जाती,
सुनती कैसे स्वर क्रंदन की,.. क्यों जग में मुझ को ला ना सकी।

या चढ़ जाती दहेज की भेंट, लाती मेरे शव को समेट,
बिलखना होता जीवन भर की,.. क्यों मुझे को जग में ला न सकी।

माँ तुम बगावती राही थी, मुझको हक देना चाही थी,
जमाने से पर लड़ न सकी,.. क्यों जग में मुझको ला न सकी।

मां तेरी कोख में आऊंगी, सम्मान सदा जब पाऊंगी,
ऐसा भारत जो बना सकी,..क्यों जग मे मुझको ला न सकी।

जहां तेरा मेरा आदर हो, ऐसा भारत यह सादर हो,
यह हसरत मां मेरे मन की,..क्यों जग में मुझ को ला न सकी।

जरूरत

आज मेरे देश को, वीरों की जरूरत है।
इसमें नहीं विलंब चले, अभी -अभी तुरत है।

बढ़ रहे गद्दार बहुत, कश्मीर की घाटी में।
तुरंत ही कुचल दे, उन्हें मिला दे माटी में।
जो दिखलाएं साहस ये, वही ईश मूरत है।
आज मेरे देश को, वीरों की जरूरत है।

बेटी बचपन पे, करते हैं जो अत्याचार
खींचकर फौरन ही,चौराहे पे उसको मार
न कर पाए कोई, कभी ऐसी जुर्रत है।
आज मेरे देश को, वीरों की जरूरत है।

कोई धर्म सिखाता न, निर्दोषों को मारो
धर्मों की करो व्याख्या, गलत को ही सुधारो
बदलेगी तभी, भारत देश की सूरत है।
आज मेरे देश को, वीरों की जरूरत है।

पुरस्कृत हों वही, जो सद्भावना ही बोंए
देश खुशी में हों खुश, देश विपत्ति में रोए
चले प्रगति पथ पर, तभी वतन खूबसूरत है।
आज मेरे देश को, वीरों की जरूरत है।

गुरू-शिष्य

प्राचीन युग में विद्या पाने, गुरुकुल में जो जाते थे।
विद्या संग नैतिक शिक्षा वहां, जी भर के वे पाते थे।
अनुशासन कर्तव्यनिष्ठा, संस्कार,सीखके आते थे।
गुरू सेवा कर आशीष, झोली भर कर वे लाते थे।।

महान युगों में शिष्य महान, राम कृष्ण से आर्य थे।
गुरू वशिष्ठ तो सांदीपनी, गुरुवर द्रोणाचार्य थे।
चाणक्य की नहीं समता, जगद्गुरु शंकराचार्य थे।
तेजवान हुए शिष्य भी, गुरुओं में औदार्य थे।।

युग बदला और बदले लोग, नया जमाना आया है।
नैतिक शिक्षा को फेंका शिष्य, गुरू को ही गुर्राया है।
दोषी हो कोई एक गुरू, सब पर दोष मढ़ाया है।
गुरु का मान घटाके शिष्य,अ पना मान बढ़ाया है।।

आज जरूरत प्राचीन वो ही, परंपरा को ले आएँ।
गुरुओं के उस आदर को हम, फिर भारत में लौटाएँ।
महान बनाके निज शिष्य को, गुरू भी मान को पाएँ।
महानता का संदेशा हम, सारे जग को दे जाएं।।

श्रद्धा

श्रद्धा करो वहीं जहां, इसकी महति जरूरत हो।
वतन गुरू मात-पिता, जहां ईश की मूरत हो।

वतन पर मर मिटने को, श्रद्धा होना चाहिए।
ऐसा कोई भी अवसर, कभी न खोना चाहिए।

श्रद्धा रख गुरूवर पे, जिसने तुमको ज्ञान दिया।
राह दिखाई जीने की, फिर जग में मान दिया।

मात-पिता जग में ला, खूबसूरत जीवन दिया।
सींचा है संस्कार से, सुंदर तन मन धन दिया।

जिसके हाथों में सृष्टि, जो तुम्हारा धर्म है।
पूजो ईश्वर को सदा, फिर करो सद्कर्म है।

अपने श्रद्धा भाव से, सींचो तुम संस्कारों को।
नौनिहाल सीख लें, सद्भाव शुद्ध विचारों को।

सत्य-असत्य

सत्य ही कटु दवाई है, असत मीठी मलाई है।
दवा करे स्वस्थ शरीर, मीठा बढ़ाता है पीर।

सत्य दवाई सेवन कर, स्वस्थ तनमन खुशियाँ भर।
जगत सत्य से रोशन हो, असत्य से तम पोषण हो।
सत्य से धवल चरित्र है, असत्य स्वभाव विचित्र है।
सत्य से हो जग में मान, होय असत्य से अपमान।

समझ सत्य को गंगाजल, जिसमें तन मन हो निर्मल।
असत्य है ज्यों नाला जल, हो मलीन आज और कल।
सत्य सदा है असली ही, असत्य रहता नकली ही।
सत्य है सोने सा खरा, असत्य नकली डरा डरा।

सत्य होता है अनमोल, होय असत्य ही बिनमोल।
सत्य यहाँ पर है दुर्लभ, असत्य होता सदा सुलभ।
सत्य स्वर्ग का द्वार है, असत्य नरक संसार है।
सत्य का नाम ईश्वर है, असत्य जीवन नश्वर है।

सत्य का तुम थामों हाथ, असत्य का तजो ही साथ।
सत्य लगाता नैया पार, होय असत्य से ही हार।
सत्य सदा अपनाएँ हम, असत्य दूर भगाएँ हम।
जीवन सुखी बिताएँ हम, तन मन स्वस्थ बनाएँ हम।

दीवारें

कहते हैं अब जमाना, खूब बदल गया है।
तभी तो चीजों का, रूप बदल गया है।

पहले तो दीवारें कच्ची मिट्टी के हुआ करते थे।
जो प्रेम और ममत्त्व से दिलों को छुआ करते थे।

दीवारें मिलकर के घर बनाया करते थे।
जो घरवालों के बीच विश्वास जगाया करते थे।

दीवारें मूक और प्रसन्न खड़े किनारे होते थे।
अंदर रहने वालों के मजबूत सहारे होते थे।

उष्णता से दूर वे शीतलता से ओतप्रोत थे।
समस्त कुटुंब के ममता आशीष के स्रोत थे।

अब जमाने के संग वह भी बदल गया है।
जमाने की तरह ही रहने को मचल गया है।

अब ईट कांक्रीट के मजबूत दीवारें बनने लगे।
रिश्ते भी अहम से उनके ही तरह तनने लगे।

दीवारों को बीच में आने की आदत हो गई।
अपनों से दूर प्रेम पूजा और इबादत हो गई।

दीवारें जरूरत से ज्यादा मजबूत होते जा रहे।
करके कमजोर जो रिश्तों को खोते जा रहे।

घरों को बनाने वाले अब मकान बनाने लगे।
यहां केवल स्वार्थ से सब पैसा कमाने लगे।

बीच में बनी दीवारें अब दिलों में बैठ गए।
अपनों से ही लोग दूरी बनाकर ऐंठ गए।

मिट्टी की दीवारों सा इसमें कोमल भाव कहां।
परिवारों में पहले का प्यार और लगाव कहां।

कर रही है ये "मधु" अब भी तुम संभल जाओ।
समेट लो परिवार को दूर न अधिक निकल जाओ।

एकता

एकता की ताकत है,बंधु सर्वोपरि।
बात यही है सदा सौ फ़ीसदी खरी।

जन-जन की एकता, गांधीजी की बात है।
संगठन रियासतें, पटेल की सौगात है।
इन्हीं से रहा करें, मुश्किलें डरी डरी।
एकता की ताकत है बंधु सर्वोपरि।

देश को स्वतंत्रता, बापू ने दिला दिया।
रियासतों को साथ, सरदार ने मिला दिया।
सबको हिला दिया, इनकी ये जादूगरी।
एकता की ताकत है, बंधु सर्वोपरि।

देश में हमारे देखो, कैसी आई आंधी जी।
आज न पटेल हैं, न ही रहे गांधीजी।
लिप्त सभी स्वार्थ में, असत्य मौज है करी।
एकता की ताकत है,बंधु सर्वोपरि।

युवा तू भटक नहीं, प्रेरणा ले पटेल से।
तौबा कर ले घाटी में, पत्थरों के खेल से।
क्यों लगाता दाँव में, जिंदगी तेरी पड़ी।
एकता की ताकत है बंधु सर्वोपरि।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - मधु तिवारी
जन्म - ग्राम करहुल, व्याहा-सिगमा, जिला- रायपुर (छ.ग.)
माता - श्रीमती चमेली तिवारी (गृहणी)
पिता - श्री सी.पी. तिवारी (साहित्यकार, सेवानिवृत्त प्राचार्य डायट)
पति - श्री चंद्रिका प्रसाद तिवारी, कपसदा।
शिक्षा - एम.ए. हिन्दी, अर्थशास्त्र, डी.एड. सेट।
पता - ग्राम पोस्ट- कपसदा, व्याहा- कुम्हारी, जिला- दुर्ग (छ.ग.)
मो. - 9753806406
प्रकाशन - कोशिश काव्य संग्रह - अंतरा शब्द शक्ति से प्रकाशित।
- देश के प्रतिनिधि सजल कार सांझा संग्रह विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित।
सम्मान - ऋतंभरा साहित्य सम्मान, साहित्य समागम सम्मान, आंचलिक साहित्य गौरव वूमेन आवाज सम्मान।
- वर्तमान में हिन्दी एवं छत्तीसगढ़ी भाषा में कविता, गीत, गज़ल, सजल, कहानी, लघुकथाएँ लेखन में सक्रिय।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-86666-23-9
मूल्य- 55/-